मानव जीवन में भारतीय संस्कृति की भूमिका और प्रभाव

प्रा.हिरा तुकाराम पोटकुले
हिंदी विभाग
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय,
शिवाजीनगर गढी तह. गेवराई
जि. बीड़, महाराष्ट्र

सारांश-

संस्कृति हमारे जीने और सोचने की विधि में हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति है। संस्कृति किसी भी देश , जाति, समुदाय की आत्मा होती है।कला संस्कृति की संवाहिका है। संस्कृति से ही देश , जाति, समुदाय के उन सभी संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों, विविध रूपों में व्याप्त मानवीय एवं रसात्मक तत्व का निर्धारण होता है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति एवं सभ्यता में से एक है। "वसुधैव कुटुंबकम" की अवधारणा भारतीय संस्कृति की विश्व को सबसे बड़ी देन है। संस्कृति व सभ्यता कोई आभूषण या बाह्य वस्तु नहीं है जिसे मनुष्य पहन सके बल्कि संस्कृति व सभ्यता वह गुण है जो हमें मनुष्य बनता है। इससे ही मनुष्य जीवन का अर्थ है और जीवन जीने का तरीका सीखता है। संस्कृति ही मानव जीवन में कलाओं के माध्यम से सौंदर्य प्रदान करती है और सौंदर्यानुभूतिपरक मानव बनाती है। हमारी सांस्कृतिक विरासत इतनी प्रगाढ है कि इसमें वह सभी पक्ष है या मूल्य सम्मिलित है जो मनुष्यों को पीढ़ी दर पीढ़ी अपने पूर्वजों से प्राप्त हुए हैं और इन्हीं के सहारे हम हमारे जीवन में सफलता से आगे बढ़ रहे हैं। योग हमारे सांस्कृतिक विरासत का खजाना है जिसका विश्व के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अनन्य साधारण महत्व है। मानव संस्कृति का निर्माता है अपितु संस्कृति मानव को मानव बनाते हैं।

कुंजी शब्द- भारतीय संस्कृति, सभ्यता, कला, मानव जीवन, विचारधारा, मूल्य
अनुसंधान पद्धति- विश्लेषणात्मक एवं सर्वेक्षणात्मक अनुसंधान पद्धति

अनुसंधान के उद्देश्य-

१) संस्कृति एवं सभ्यता के अर्थ को समझना।

२)संस्कृति एवं सभ्यता के बीच स्थापित संबंध का विवेचन करना।

३)संस्कृति सभ्यता एवं कला का महत्व विश्लेषित करना।

४)मानव जीवन में संस्कृति एवं सभ्यता की भूमिका और प्रभाव का विश्लेषण करना।

संस्कृति हमारे जीने और सोचने की विधि में हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति है। संस्कृति किसी भी देश , जाति, समुदाय की आत्मा होती है। कला संस्कृति की संवाहिका है। संस्कृति से ही देश , जाति, समुदाय के उन सभी संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों, विविध रूपों में व्याप्त मानवीय एवं रसात्मक तत्व का निर्धारण होता है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति एवं सभ्यता में से एक है। "वसुधैव कुटुंबकम" की अवधारणा भारतीय संस्कृति की विश्व को सबसे बड़ी देन है। विविधता में एकता की विचारधारा का एक विशाल सांस्कृतिक संगम स्थल है , भारत। संस्कृति के माध्यम से ही लोग परस्पर संप्रेषण करते हैं। विचारों का आदान-प्रदान करते हैं और जीवन से संबंधित विषय में अपने अभिवृत्तियों और ज्ञान को विकसित करते हैं। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता 'सत्य, शिवं, सुंदरम' की भावना से युक्त होने के कारण इसमें नित्य नविनता एवं विविधता दिखाई देती है। इन तीनों मूल्य का प्रभाव मानव जीवन पर अधिक है। संस्कृति कला के माध्यम से मानव को सौंदर्य प्रदान करती हैं , नैतिकता के सहारे मानव को एक दूसरे के निकट संपर्क में लाकर मानव जीवन में प्रेम , सहिष्णुता और शांति का पाठ पढ़ाती हैं। संस्कृति एवं सभ्यता कोई आभूषण या बाह्य वस्तु नहीं है जिसे मनुष्य पहन सके बल्कि संस्कृति व सभ्यता वह गुण है जो हमें मनुष्य बनता है। इससे ही मनुष्य जीवन का अर्थ और जीवन जीने का तरीका सीखता है।

"संस्कृति और सभ्यता दोनों शब्द प्राय: पर्याय के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं। फिर भी दोनों में भिन्नता होते हुए दोनों के अर्थ अलग-अलग है। 'सभ्यता' का अर्थ है जीने के बेहतर तरीके और कभी-कभी अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने समक्ष प्रकृति को भी झुका देना। इसके अंतर्गत समाजों को राजनीतिक रूप से सुपरिभाषित वर्गों में संगठित करना भी सम्मिलित है जो भोजन , वस्त्र, संप्रेषण आदि के विषय में जीवन सर को सुधारने का प्रयत्न करते रहते हैं। इस प्रकार कुछ वर्ग अपने आप को अधिक सभ्य समझते हैं और दूसरों को हेय दृष्टि से देखते हैं। कुछ वर्गों की इस मनोवृत्ति ने कई बार संघर्षों को भी जन्म दिया है जिनका परिणाम मनुष्य के विनाशकारी विध्वंश के रूप में हुआ है। इसके विपरीत संस्कृति आंतरिक अनुभूति से संबंध है जिसमें मन और हृदय की पवित्रता निहित है। इसमें कला , विज्ञान,

संगीत और नृत्य तथा मानव जीवन की उच्चतर उपलब्धियां सम्मिलित है जिन्हें सांस्कृतिक गतिविधियां कहा जाता है। एक व्यक्ति जो निर्धन है , सस्ते वस्त्र पहने हैं , वह असभ्य तो कहा जा सकता है परंतु वह सबसे अधिक सुसंस्कृत व्यक्ति भी कहा जा सकता है। एक व्यक्ति जिसके पास बहुत धन है , वह सभ्यता हो सकता है पर आवश्यक नहीं कि वह सुसंस्कृत भी हो।"(१) अत: संस्कृति का संबंध हमारी सोच , चिंतन और विचारधारा से होता है जबकि सभ्यता का संबंध हमारे बाह्य जीवन के ढंग से होता है।

संस्कृति और सभ्यता दोनों के क्रियाकलाप अलग है फिर भी दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए भी है। संस्कृति का क्षेत्र सभ्यता से कहीं अधिक व्यापक होते हुए भी दोनों में अंतरिक संबंध स्थित है। संस्कृति में विज्ञान , कला, संगीत, नृत्य और मानव जीवन की उच्चतर स्तर निहित है और सभ्यता में मानव जीवन के आर्थिक , प्रौद्यौगिकीय, राजनीतिक, प्रशासनिक व दृश्य कला के रूपों का प्रदर्शन होता है जो मानव जीवन को सुखमय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। डॉ. राजेंद्र प्रसाद भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के संबंध में कहते हैं , "यह एक नैतिक और आध्यात्मिक स्रोत है जो अनंत काल से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस सारे देश में बहता रहा है और कभी-कभी मूर्त रूप होकर हमारे सामने आता रहा है। यह हमारा सौभाग्य रहा है कि हमने ऐसे ही एक मूर्त रूप को अपने बीच चलते- फिरते , हंसते- रोते भी देखा है और जिसने अमरतत्व की याद दिलाकर हमारी सूखी हड्डियों में नई मज्जा डाल हमारे मृतप्राय शरीर में नए प्राण फूंके और मुरझाए हुए दिलों को फिर खिला दिया। वह अमरतत्व सत्य और अहिंसा का है जो केवल इसी देश के लिए नहीं आज मानव मात्र के जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक हो गया है। हम इस देश में प्रजातंत्र की स्थापना कर चुके हैं ; जिसका अर्थ है व्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता, जिसमें वह अपना पूरा विकास कर सके और साथ ही सामूहिक और सामाजिक एकता भी। व्यक्ति और समाज के बीच में विरोध का आभास होता है। व्यक्ति अपने उन्नति और विकास चाहता है और यदि एक की उन्नति और विकास दूसरे की उन्नति और विकास में बाधक हो तो संघर्ष पैदा होता है और यह संघर्ष तभी दूर हो सकता है जब उसके विकास के पथ अहिंसा के हो। हमारी सारी संस्कृति का मूलाधार इसी अहिंसा- तत्व पर स्थापित रहा है।ज हाँ - जहाँ हमारे नैतिक सिद्धांतों का वर्णन आया है , अहिंसा को ही उनमें मुख्य स्थान दिया गया है। अहिंसा का दूसरा नाम या दूसरा रूप त्याग है और हिंसा का दूसरा रूप या दूसरा नाम स्वार्थ ; जो बहुत करके भोग के रूप में हमारे सामने आता है। पर हमारी सभ्यता ने तो भोग भी त्याग से ही निकला है और भोग भी त्याग में ही पाया है।"(२) भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का प्रभाव

मनुष्य जीवन पर होने के कारण ही आधुनिकीकरण के इस दौर में भी देश-देश के बीच के विरोध, व्यक्ति- समाज के बीच के विरोध समाज- समाज के बीच के विरोध , व्यक्ति-व्यक्ति के बीच के मनमुटाव एवं विरोध को हम मिटाना चाहते हैं।

ब्रिटिश काल में भारतीय संस्कृति को दबाने की कोशिश की गई लेकिन भारतीय संस्कृति ऐसे सिद्धांतों पर आश्रित है जो प्राचीन होते भी नवीनता की अच्छाई का स्वीकार करती है। भारतीय संस्कृति विभिन्न सांस्कृतिक धाराओं का महासंगम है। भारतीय संस्कृति के सिद्धांत किसी व्यक्ति, जाती, समुदाय, समाज या देश के लिए न होकर समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए है। यूनानी, पर्शियन आदि विदेशी जातियों के हमले के साथ-साथ मुगल और अंग्रेजी सत्ता के आक्रमणों से भी यह संस्कृति नष्ट नहीं हुई क्योंकि उसके आधार सहनशीलता , उदारता, प्राणशीलता के अपने स्वभावगत गुणों के कारण अधिक पुष्ट एवं समृद्ध हुई है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद अपनी सांस्कृतिक विरासत के बारे में लिखते हैं ," इन विभिन्नताओं को देखकर अगर अपरिचित आदमी घबराकर कह उठे कि यह एक देश नहीं, अनेक देशों का एक समूह है; यह एक जाति नहीं अनेक जातियों का समूह है; तो इसमें अक्षर एक ही बात नहीं, क्योंकि ऊपर से देखने वाले को, जो गहराई में नहीं जाता , विभिन्नता ही देखने में आएगी। पर विचार करके देखा देखा जाए तो इन विभिन्नताओं के तह में एक ऐसी समता और एकता फैली हुई है जो अन्य विभिन्नताओं को ठीक उसी तरह पिरो लेती है, और पिरोकर एक सुंदर समूह बना देती है , जैसे रेशमी धागा भिन्न-भिन्न प्रकार की और विभिन्न रंगों की सुंदर माणियों अथवा फूलों को पिरोकर एक सुंदर हार तैयार कर देता है , जिसका प्रत्येक मणि या फूल दूसरों से ना तो अलग है और ना हो सकता है और केवल अपने सुंदरता से लोगों को मोहता ही नहीं है बल्कि दूसरों की सुंदरता से वह स्वयं सुशोभित होता है और उसी तरह अपनी सुंदरता से दूसरों को भी सुशोभित करता है। यह केवल एक काव्य की भावना नहीं है बल्कि एक ऐतिहासिक सत्य है जो हमारे वर्षों से अलग-अलग अस्तित्व रखते हुए अनेकानेक जल-प्रतापों का और प्रवाहों का संगमस्थल बनकर एक प्रकाण्ड और प्रगाढ समुद्र के रूप में भारत में व्याप्त है जिसे भारतीय संस्कृति का नाम दे सकते हैं।"(३)

भारत विविधाता में एकता की विचारधारा का एक विशाल सांस्कृतिक संगमस्थल है। यह विविधता, प्राचीनता, और महिमा का चित्रण करती है , यही कारण है कि भारतीय संस्कृति विश्व में आद्वितिय है। जिस प्रकार कला में बाह्य सौंदर्य के साथ-साथ आंतरिक सौंदर्य भाव प्रधान होता है उसी प्रकार मानव जीवन में भी बाह्य सौंदर्य के साथ-साथ अंतर मन का सौंदर्य भी महत्वपूर्ण है , तब जाकर जीवन भी सुंदरता बढ़ती है। संस्कृति और कला का आपसी रिश्ता

काफी गहरा है। मानव जीवन में कला के माध्यम से ही संस्कृति का संचार एवं अभिव्यक्ति होती है। संगीत , विद्या, नाटक, चित्रकला, स्थापत्य कला , सिनेमा, फोटोग्राफी, साहित्य आदि के माध्यम से कला अपने सांस्कृतिक सरोकारों को आगे बढ़ती है।

अत: संस्कृति और विरासत की भूमि भारत में मूर्तियों और स्मारकों से लेकर सुंदर कला और वास्तु कला के साथ हर क्षेत्र की अलग-अलग अनोखी रहन-सहन , भोजन के अद्भुत रूप, अनोखे व्यंजन है। बावजूद इसके आज की युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति को भूलकर विघटित पश्चिमी संस्कृति को अपना रही है। भारतीय संस्कृति के आदर्शों, जीवन मूल्यों, विविधता में एकता और एकता में विविधता की विचारधारा , वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा को विश्व अपना रहा है और भारतीय युवा पीढी मोहजाल में फंसकर पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण कर रही है यह सोचनीय बात है। भारतीय संस्कृति ने दुसरी संस्कृतियों की अच्छी बातों को उदारता पूर्वक ग्रहण करके अपना पृथक अस्तित्व बनाए रखा है। संस्कृति मानव जीवन में कला के माध्यम से सौंदर्य प्रदान करती है और सौंदर्य अनुभूतिपरख मानव बनती है। हमारी सांस्कृतिक विरासत इतनी प्रगाढ है की इसमें वे सभी मूल्य सम्मिलित है जो मनुष्य को पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी पूर्वजों से प्राप्त हुए हैं और इन्हीं के सहारे हम हमारे जीवन में सफलता से आगे बढ़ रहे हैं। योग हमारी सांस्कृतिक विरासत का खजाना है जिसका विश्व के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अन्य साधारण महत्व है। मानव ही संस्कृति का निर्माता है अपितु संस्कृति मानव को मानव बनती है।

संदर्भ सूची

१. भारतीय संस्कृति और विरासत-अमिरचंद गोयल, पृ.३
२. भारतीय संस्कृति - डॉ. राजेंद्र प्रसाद, गद्य प्रभा-संपा. डॉ.अलोक गुप्त, पृ.३३
३.भारतीय संस्कृति - डॉ. राजेंद्र प्साद, गद्य प्रभा-संपा. डॉ.अलोक गुप्त, पृ.३२